A A ONLINE SOLUTION

HINDI का सभी SUBJECTIVE महत्वपूर्ण GUESS प्रश्न

By Ashfaque sir
Whatsapp -8210423200

श्रम विभाजन और जाति प्रथा

1.कुशल व्यक्ति या सक्षम श्रमिक समाज का निर्माण करने के लिए क्या आवश्यक है ?

Ans- कुशल व्यक्ति या सक्षम श्रमिक समाज का निर्माण करने के लिए यह आवश्यक है कि हम व्यक्तियों की क्षमता इस सीमा तक विकसित करें जिससे वह अपने पेशा या कार्य का चुनाव निजी क्षमता और योग्यता के आधार पर कर सके।

2. भीमराव अंबेदकर किस विडम्बना की बात करते हैं?

Ans .लेखक भीमराव अंबेदकर का मानना है कि हमारे आधुनिक सभ्य समाज में भी जातिवाद के पोषकों की कमी नहीं है। इसके पोषक श्रम विभाजन का आधार जाति प्रथा को मानते हैं। उनका कहना है कि हमारे इस समाज में 'कार्य कुशलता' के लिए श्रम विभाजन आवश्यक है और जाति प्रथा भी श्रम विभाजन का दूसरा रूप है। इसलिए इसमें कोई बुराई नहीं है। जबकि जाति प्रथा का दूषित सिद्धांत मनुष्य के प्रशिक्षण अथवा निजी क्षमता का विचार किये बिना गर्भधारण के समय से ही मनुष्य का पेशा निर्धारित कर दिया जाता है। यह इस आधुनिक सभ्य समाज के लिए विडम्बना की बाता है।

3. जातिप्रथा भारत के बेरोजगारी का एक प्रमुख और प्रत्यक्ष कारण कैसे बनी हुई है?

Ans .भीमराव अंबेदकर ने 'श्रम विभाजन और जाति प्रथा' में लिखा है कि जाति प्रथा पेशे का दोषपूर्ण पूर्व निर्धारित ही नहीं करती बल्कि मनुष्य को जीवनभर के लिए एक पेशों में बाँध भी देती है। भले ही पेशा अनुपयुक्त या अपर्याप्त होने के कारण वह भूखों मर जाए। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी मनुष्य को अपना पेशा बदलने की स्वतंत्रता न हो तो भूखे मरने के अलावा क्या रह जाता है। इस प्रकार पेशा परिवर्तन की अनुमति न देकर जाति प्रथा भारत में बेरोजगारी का एक प्रमुख व प्रत्यक्ष कारण बनी हुई है।

4. जाति भारतीय समाज में श्रम विभाजन का स्वाभाविक रूप क्यों नहीं कहीं विभाजन जा सकती?

Ans. भीमराव अम्बेदकर नेश्रम विभाजन और जाति प्रथा' शीर्षक निबंध में भारत में व्याप्त जाति प्रथा की निन्दा की है। जाति प्रथा भारतीय समाज में श्रम विभाजन का स्वभाविक रूप नहीं कही जा सकती है क्योंकि यह मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं है। यह प्रथा पेशे की स्वतंत्रता का गला घोंट देती है यह एक दूषित सिद्धांत है जो मनुष्य के प्रशिक्षण अथवा उसकी निजी क्षमता का विचार किए बिना गर्भधारण के समय से ही मनुष्य का पेशा निर्धारित कर देती है।

5. सच्चे लोकतंत्र की स्थापना के लिए लेखक ने किन विशेषताओं को आवश्यक माना है?

Ans .भीमराव अंबेदकर का मानना है कि सच्चा लोकतंत्र स्वतंत्रता, समता और भ्रातृत्व पर आधारित होना चाहिए। लोकतंत्र केवल शासन की एक पद्धति ही नहीं है, लोकतंत्र मूलतः सामूहिक जीवनचर्चा की एक रीति तथा समाज 'के सम्मिलित अनुभवों के आदान-प्रदान का नाम है। ऐसे समाज के बहुविध हितों में सबका भाग होना चाहिए तथा सबको उनकी रक्षा के प्रति सजग रहना चाहिए अर्थात् एक-दूसरे के प्रति श्रद्धा व सम्मान का भाव हो ।

6. लेखक ने पाठ में किन पहलुओं से जाति प्रथा को एक हानिकारक प्रथा के रूप में दिखाया है?

मानव मुक्ति के पुरोधा एवं संविधान निर्माता भीमराव अंबेडकर ने 'श्रम' कियाविभाजन और जाति प्रथा' शीर्षक निबंध में जाति प्रथा को हानिकारक प्रथा बताया है। जाति प्रथा श्रमिकों को ऊँच और नीच में बाँट देती है। जाति प्रथा पेशा- चयन की स्वतंत्रता का गला घोंट देती है।श्रम विभाजन की दृष्टि से भी जाति प्रथा दोषपूर्ण है। यह मनुष्य की इच्छा पर निर्भर नहीं है। मनुष्य की व्यक्तिगत भावना तथा व्यक्तिगत रुचि का इसमें कोई स्थान या महत्त्व नहीं रहता। आर्थिक पहलू से भी जाति प्रथा हानिकारक है, क्योंकि लोग रुचि के साथ काम नहीं करते। यह प्रथा मनुष्य की स्वाभाविक प्रेरणा रुचि व आत्मशक्ति को दबाकर उन्हें अस्वाभाविक नियमों में जकड़कर निष्क्रिय बना देती है।

7. लेखक के अनुसार आदर्श समाज में किस प्रकार की गतिशीलता होनी चाहिए?

Ans. लेखक भीमराव अम्बेदकर के अनुसार किसी भी आदर्श समाज में इतनी गतिशीलता होनी चाहिए जिसमें कोई भी वांछित परिवर्तन समाज के एक छोर से दूसरे छोर तक संचारित हो सके। ऐसे समाज में बहुविध हितों में सबका भाग होना चाहिए तथा सबको उनकी रक्षा के प्रति सजग रहना चाहिए।

8. अम्बेदकर के अनुसार जाति-प्रथा के पोषक उसके पक्ष में क्या तर्क देता है ?

Ans. अम्बेदकर के अनुसार यह विडम्बना की बात है कि इस आधुनिक और सभ्य समाज में भी 'जातिवाद' के पोषकों की कमी नहीं है। इसके पोषक कई आधारों पर इसका समर्थन करते हैं। समर्थन का एक आधार यह कहा जाता है कि आधुनिक सभ्य समाज 'कार्य कुशलता' के लिए श्रम विभाजन को आवश्यक मानता है और चूँकि जाति प्रथा भी श्रम विभाजन का ही दूसरा रूप है इसलिए इसमें कोई बुराई नहीं है।

विष के दांत

3. खोखा किन मामलों में अपवाद था?

Ans .खोखा, सेन दम्पति का एक मात्र सबसे छोटा लड़का है, जो पाँच लड़कियों के बाद हुआ था। वह ना उम्मीद बुढ़ापे की आँखों का तारा है। खोखा का आविर्भाव तब जाकर हुआ था, जब उसकी कोई उम्मीद सेन दम्पति को बाकी नहीं रह गई थी। खोखा जीवन के नियम का अपवाद था और यह अस्वाभाविक नहीं था कि वह घर के नियमों का भी अपवाद था।

4. विष के दाँत कहानी का नायक कौन है? तर्क पूर्ण उत्तर दें।

Ans. आचार्य नलिन विलोचन शर्मा की कहानी 'विष के दाँत' का नायक मदन है। काशू इस कहानी का मुख्य पात्र है जो कहानी के आरंभ से अंत तछाया रहता है। वह जीवन के नियमों का अपवाद था। उसे अपने पिता की अमीरी का घमंड था। मदन एक गरीब किन्तु निर्भीक और जीवट प्रवृत्ति का लड़का है। वह आत्म सम्मान प्रिय बालक है, इसी कारण वह ड्राइवर की बातों का प्रतिरोध करता है। मदन ही काशू के घमंड रूपी विष के दाँत को तोड़ता है। किसी कहानी का नायक वह होता है जो कहानी को उसके उद्देश्य तक पहुँचाता है। कहानी का वह बालक मदन है।अतः कहानी में संक्षिप्त भूमिका होने के बावजूद नायक मदन ही है।

5. 'विष के दाँत' कहानी के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

Ans .आचार्य नलिन विलोचन शर्मा ने 'विष के दाँत' शीर्षक अत्यंत सार्थक, सटीक एवं चुस्त-दुरुस्त दिया है। खोखा और मदन के बीच झगड़ा हो जाता है। मदन गरीब वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है खोखा अमीर वर्
सार्थक है।

6. मदन और ड्राइवर के बीच के विवाद के द्वारा कहानीकार क्या बताना चाहता है?

भारत में हम क्या सिखे

1. धर्मों की दृष्टि से भारत का क्या महत्त्व है?

Ans. विश्वविख्यात विद्वान मैक्समूलर कहते हैं कि धर्मों की दृष्टि से भारत का विशेष महत्व है। विश्व की सभ्यता भारत प्राचीनता और विलक्षणता से बहुत कुछ सीखती है। भारत में धर्म के वास्तविक उद्भव, उसके प्राकृतिक विकास तथा उसकेअपरिहार्य श्रीयमाण रूप का प्रत्यक्ष परिचय मिलता है। भारत ब्रह्मण या वैदिक धर्म की भूमि है, बौद्ध धर्म की यह जन्मभूमि है, पारसियों के जरथुस्त्र धर्म की यह शरणस्थली है। आज भी यहाँ नित्य नये मत-मतान्तरप्रकट व विकसित होते रहते हैं।

2.सच्चे भारत के दर्शन कहाँ हो सकते हैं और क्यों?

Ans. लेखक की दृष्टि में सच्चे भारत के दर्शन ग्रामीण क्षेत्रों में हो सकते हैं क्योंकि भारत गाँवों का देश है। इसके 80-90% जनता गाँवों में निवास करती है। इसलिए भारतीय आत्मा गाँवों में बसती है। यहाँ आज के भारत कलकता, बम्बई, मद्रास या दूसरे शहरों की चमक बनावटी होती है जबकि ग्रामीण जीवन सादगी, त्याग और प्रेम पर आधारित होते हैं।

3. लेखक ने नया सिकंदर किसे कहा है और क्यों?

Ans .विश्वविख्यात विद्वान मैक्समूलर ने भारतीय सिविल सेवा हेतु चयनित युवा अंग्रेज अधिकारियों को नया सिकन्दर कहा है। सिकन्दर प्राचीन इतिहास के एक वीर यूनानी राजा थे, जो अपनी प्रबल पराक्रम, अथक, उत्साह, अदम्य महत्त्वाकांक्षा के लिए जाने जाते हैं। प्रशिक्षु अधिकारियों को लेखक ने नया सिकन्दर कह कर भारत पर विजय एवं भारत की नयी खोज करने को प्रेरित किया है।

4. समस्त भूमण्डल में सर्वविद् सम्पदा और प्राकृतिक सौन्दर्य से पारी पूर्ण देश भारत है |लेखक ने ऐसा क्यों कहा ?

Ans. मैक्समूलर के मतानुसार सर्वविद् सम्पदा और प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण देश भारत है। प्राकृतिक सुषमा की दृष्टि से भारत भूतल का स्वर्ग है। मानव मस्तिष्क की उत्कृष्टतम उपलब्धियों का देश भारत है। यह देश प्रकृति-प्रेम, मानव-प्रेम, ज्ञान-विज्ञान, कला-संस्कृति और जीवन-दर्शन की दृष्टि से विश्व में अपनी पहचान रखता है। यूनानी, रोमन और सेमेटिक जाति के यहूदियों की विचारधारा से कहीं अधिक सम्पन्न विचारधारा भारतभूमि की रही है। भारत विश्वगुरु की वास्तविक गरिमा रखता है। लेखक ने ऐसा भाव भारत के साहित्य दर्शन से प्रभावित होकर और इसकी मानवीयता व जीवन-मूल्यों से अभिभूत होकर रखा है।

5. भारत किस अतीत और सुदूर भविष्य को जोड़ता है स्पष्ट करें?

Ans .भारतीय सिविल सेवा हेतु चयनित युवा अंग्रेज अधिकारियों को संबोधित करते हुए मैक्समूलर ने कहा कि भारत में आप अपने-आपको सर्वत्र अत्यंत प्राचीन और सुदूर भविष्य के बीच खड़ा पायेंगे। यहाँ मानवीय जीवन का प्राचीनतम ज्ञान विद्यमान है। यहाँ की भूमि प्राचीन इतिहास से जुड़ी रही है। यहाँ ऐसे सुअवसर भी मिलेंगे जो किसी पुरातन विश्व में ही सुलभ हो सकते हैं। यहाँ किसी भी ज्वलंत समस्या को लिया जाय तो भारत इसके लिए उपयुक्त स्थल है। अतः हर जगह भारत अतीत और सुदूर भविष्य को जोड़ता नजर आता है।

नाखून क्यों बढ़ते है ?

1. मनुष्य बार-बार नाखून क्यों काटता है?

Ans. नाखून, मनुष्य के पाश्वी वृत्ति के जीवंत प्रतीक है। मनुष्य अपनी पशुता को . जितनी बार काट दें वह मरना नहीं जानती। इसके नाखून आज भी बढ़ रहे हैं। यह मनुष्य के पशुत्व का प्रमाण है। अपने नाखून को बार-बार काटने की प्रवृत्ति उसके मनुष्यता की निशानी है। मनुष्य के भीतर बर्वर युग का कोई अवशेष रह न जाए इसलिए मनुष्य अपने नाखून को बार-बार काटता है |

2. नाखून बढ़ने का प्रश्न लेखक के सामने कैसे उपस्थित

Ans .एक दिन लेखक की छोटी लड़की ने उनसे अचानक पूछ दिया कि आदमी के नाखून क्यों बढ़ते हैं? इस प्रश्न का उत्तर के लिए लेखक पहले से तैयार नहीं था, परंतु प्रश्न सुनकर सोच में पड़ गये। इसी चिन्तन प्रक्रिया में निबंध अस्तित्व में आया।

3. लेखक के अनुसार सफलता और चरितार्थ क्या है?

Ans .लेखक हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार मनुष्य मरणास्त्रों के संचयन से, बाह्य उपकरणों के बाहुल्य से उस वस्तु को पा लेना सफलता है, जबकि चरितार्थ लेखक के अनुसार मनुष्य के प्रेम में है, मैत्री में है, त्याग में है, अपने को सबके मंगल के लिए निःशेष भाव से दे देने में है।

4. लेखक द्वारा नाखूनों को अस्त्र के रूप में देखना कहाँ तक तर्क संगत है

Ans .प्राचीन काल में जब मनुष्य जंगली था, वनमानुष जैसा। उस समय उसकी जीवन रक्षा के लिए नाखून बहुत जरूरी थे। उन दिनों उसे जूझना पड़ता था, प्रतिद्वंद्वियों को पछाड़ना पड़ता था। उस समय मनुष्य के पास हथियार नहीं थे तो वह नाखूनों से अस्त्र का काम लेता था। अतः लेखक द्वारा नाखूनों को अस्त्र के रूप में देखना तर्क संगत प्रतीत होता है।

5. लेखक क्यों पूछता है कि मनुष्य किस ओर बढ़ रहा है, पशुता की ओर या मनुष्यता की ओर।

Ans .नाखून, मनुष्य के पाश्वीवृत्ति के जीवंत प्रतीक है। यह उसके पशुत्व का प्रमाण है। अब मनुष्य नाखून को नहीं चाहता, अब उसे बर्बर युग का कोई अवशेष असह्य है। उसे काटने की जो प्रवृत्ति है, वह उसकी मनुष्यता की निशानी है। दूसरी ओर आज मनुष्य अस्त्र-शस्त्र का जखीरा इकट्ठा किए जा रहा है, यह तो पशुता की निशानी ही कही जायेगी। स्पष्ट है मनुष्य चाहता जरूर है कि वह मनुष्यता की ओर बढ़े पर वह पशुता की ओर ही बढ़ रहा है।

नागरी लिपि

1.देवनागरी लिपि के अक्षरों में स्थिरता कैसे आयी है?

Ans. करीब दो सदी पहले पहली बार देवनागरी लिपि के टाइप बने और इसमें पुस्तकें छपने लगी, तब से देवनागरी लिपि के अक्षरों में स्थिरता आ गई।

2.लेखक ने पटना से नौकरी का क्या संबंध बताया

Ans .उत्तर भारत की उत्तर एक विशेष शैली को 'नागर शैली' कहते हैं। यह नागरी शब्द किसी नगर अर्थात् बड़े शहर से संबंधित है। 'पादताडितकम्' नामक एक नाटक से जानकारी मिलती है कि पाटलिपुत्र (पटना) को नगर कहते हैं। अतः 'नागर' या 'नागरी' शब्द उत्तर भारत के किसी बड़े नगर से संबंध रखता है। असंभव नहीं कि यह बड़ा नगर प्राचीन पटना ही हो।

3. देवनागरी लिपि में कौन-सी भाषाएँ लिखी जाती है?

Ans. देवनागरी लिपि में हिन्दी तथा इसकी विविध बोलियाँ, हमारे पड़ोसी देश नेपाल की नेपाली (खसकुरा) व नेवारी भाषाएँ तथा मराठी भाषाएँ लिखी जाती है।

4. नागरी लिपि कब तक सर्व देश लिपि थी

Ans .नागरी लिपि किसी नगर विशेष की लिपि नहीं थी। ईसा की आठवीं-नौवीं सदी से नागरी लिपि का प्रचलन सारे देश में था। उस समय तक यह एक सार्वदेशिक लिपि मानी जाती रही है। यह लिपि काफी लोकप्रिय थी। इस लिपि का प्रचार-प्रसार सार्वदेशिक और सार्वकालिक रहा है।

बहादुर

1. लेखक को क्यों लगता है कि नौकर रखना बहुत जरूरी हो गया था?

Ans. लेखक के सभी और रिश्तेदार अच्छे ओहदों पर थे और उन सभी के ह नौकर थे। लेखक जब बहन की शादी में घर गया तो वहाँ नौकरों का मुख देखा। उनकी दोनों भाभियों रानी की तरह बैठकर चारपाइयों तोड़ती थी. जबकि पत्नी निर्मला को सवेरे से लेकर रात तक खटना पड़ता था। वापस आने पर उनकी पत्नी निर्मला दोनों जून नौकर-चाकर की माला जपने लगी और भाग्य को कोसते हुए अपने को अभागिन और दुखिया स्त्री मानने लगी। ऐसी परिस्थितियों में लेखक को भीकर रखना बहुत जरूरी हो गया था।

2. बहादुर अपने घर से क्यों भाग गया था?

Ans .बहादुर के पिता का निधन युद्ध में हो गया था। उसकी माँ उसका भरण-पोषण करती थी। माँ उसकी बड़ी गुस्सैल थी, उसकी गलतियों पर काफी पीटती थी। एक दिन भैंस की पिटाई का काल्पनिक अनुमान करके उसकी में एक डंडे से बहादुर की दुगुनी पिटाई की और उसको वहीं कराहता हुआ छोड़कर घर लौट गई। इससे बहादुर का मन माँ से फट गया और वह घर से भाग गया।

3. बहादुर ने लेखक का घर क्यों छोड़ दिया?

Ans .एक दिन लेखक के घर आए रिश्तेदार ने बहादुर पर रुपये चोरी का आरोप लगा देता है। गलत आरोप के कारण बहादुर इनकार कर दिया फिर भी उसे डराया धमकाया और पीटा जाता है। इस घटना के बाद बहादुर काफी डाँट-नार खाने लगा। घर के सभी लोग कुत्ते की तरह दुरदुराया करते। किशोर तो जैसे उसकी जान के पीछे पड़ गया था। ईमानदार बहादुर को इस घटना पर अत्यन्त क्षोभ होता है और वह लेखक का घर छोड़कर चला जाता है |

4. बहादुर पर ही चोरी का आरोप क्यों लगाया जाता है और उस पर इस आरोप का क्या असर पड़ता है?

Ans. लेखक के घर आए रिश्तेदार ने सोचा कि इस घर में बहादुर नौकर है और वह बाहरी सदस्य है। उस पर आरोप लगाने से इस घटना को वास्तविक मान लेंगे।ईमानदार बहादुर को इस घटना पर अत्यंत क्षोभ होता है। उसकी आत्मा

को कष्ट होता है। वह उदास रहने लगता है। इस घटना के बाद उससे दुर्व्यवहार बढ़ जाता है। लेखक का लड़का तो जैसे उसकी जान के पीछे पड़ गया। अन्ततः बहादुर चोरी के आरोप के कारण लेखक का घर छोड़कर चला जाता है।

5. अपने शब्दों में पहली बार दिखें बहादुर का वर्णन कीजिए।

Ans. पहली बार दिखा बहादुर अपनी आँखें मटका रहा था। उसकी उम्र उस समय बारह-तेरह वर्ष की थी। उसका शरीर ढिगना चकइठ था, उसका **Ans** रंग गोरा और मुँह चपटा था। वह सफेद नेकर, आधी बाँह की सफेद कमीज और भूरे रंग का पुराना जूता पहने था। उसके गले में स्काउटों की तरह एक रूमाल बँधा था।

6. बहादुर के चले जाने पर सबको पछतावा क्यों होता है?

Ans. बहादुर से सबको सुख मिलने लगा था। सबकी सहुलियतें बढ़ गयी थीं। सामाजिक सभी स्वच्छ एवं स्वस्थ नजर आने लगे थे। सबको तनाव मुक्त रखने में अधिक बहादुर की भूमिका प्रमुख थी। वह लगभग घर का सदस्य बन गया था। वह सब कुछ सहकर काम करता था। कोई सामान भी वह नहीं चुराकर ले गया। इसीलिए उसकी कमी सबको अखरने लगी। सभी पछतावा करने लगे।

परम्परा का मूल्यांकन

1.परम्परा का ज्ञान किसके लिए सबसे ज्यादा आवश्यक है और क्यों?

Ans. डॉ० रामविलास शर्मा ने अपने निबंध 'परम्परा का मूल्यांकन' में समाज साहित्य और परम्परा के पारस्परिक संबंधों की सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक मीमांसा की है।साहित्य की परंपरा का ज्ञान उन लोगों, लेखकों, चितकों के लिए सबसे ज्यादा आवश्यक है जो लोग साहित्य में युग परिवर्तन करना चाहते हैं, जो लोग लकीर के फकीर नहीं है, जो रूढ़ियों तोड़कर क्रांतिकारी साहित्य रचना चाहते हैं। इससे समाज में बुनियादी परिवर्तन करके वर्गहीन शोषण

2. बहुजातीय राष्ट्र की हैसियत से कोई भी देश भारत का मुकाबला क्यों नहीं कर सकता?

Ans. डॉ० रामविलास शर्मा के अनुसार संसार का कोई भी देश, बहुजातीय राष्ट्र की हैसियत से, इतिहास को ध्यान में रखे तो, भारत का मुकाबला नहीं कर सकता। भारत में राष्ट्रीयता एक जाति द्वारा दूसरी जातियों पर राजनीतिक प्रभुत्व कायम करके स्थापित नहीं हुई। वह मुख्यतः संस्कृति और इतिहास की देन है।इन संस्कृति के निर्माण में इस देश के कवियों का सर्वोच्च स्थान है।क्या कोई भी देश भारत के रामायण और महाभारत का मुकाबला कर सकता है?

3. राजनीतिक मूल्यों से साहित्य के मूल्य अधिक स्थायी कैसे होते हैं? 'परंपरा का मूल्यांकन' शीर्षक पाठ के अनुसार उत्तर लिखें।

Ans. राजनीतिक मूल्यों से साहित्य के मूल्य अधिक स्थायी होते हैं क्योंकि राजनीतिक मूल्य कालान्तर में नष्ट हो जाते पर साहित्य के मूल्य उत्तरोतर विकासोन्मुख होते हैं। लेखक रामविलास शर्मा इसकी पुष्टि में अंग्रेज कवि रेनीसन द्वारा लैटिन कवि वर्जिल पर रचित उस कविता की चर्चा करते हैं जिसमें कहा गया कि रोमन साम्राज्य का वैभव समाप्त हो गया पर वर्जिल के काव्य सागर की ध्वनि आज भी सुनाई देती है और हृदय को आनंद विहल कर देती है।

जीत जीत मैं निरखत हूं

1.बिरजू महाराज अपना सबसे बड़ा जज किसको मानते थे?

Ans. पंडित बिरजू महाराज को आगे बढ़ाने में सबसे बड़ा हाथ उनकी अम्मा जी का था। इन्होंने ठुमरी अपनी अम्मा से ही सीखा था।अपने बाबूजी के मृत्यु के बाद जब भी वे बिरजू महाराज नाचते तो सबसे बड़ा एक्जामिनर था। जज अम्मा को ही मानते। वे उनसे पूछते कही गड़बड़ी तो नहीं हो रही। तब अम्मा बताती थी और कहती तुम बाबू जी की तस्वीर हो। इस तरह अम्मा इनका उप्साहवद्र्धन करते रहती थी। इसलिए बिरजू महाराज अपना सबसे बड़ा जज अपनी माँ को मानते थे।

2. बिरजू महाराज के जीवन में सबसे दुखद समय कब आया?

Ans. बिरजू महाराज जब साढ़े नौ साल के थे तब उनके पिता जी की मृत्यु हुई थी। उस समय वे इतना छोटा थे कि उनको यह दुख समझ में भी नहीं आया। उनके मरते ही बिरजू महाराज के परिवार में दुखद दिनों की शुरुआत हो जाती है।स्थिति इतनी दुखदायी थी कि बिल्कुल पैसा नहीं था। पिताजी का दसवाँऔर तेरहवीं करने के लिए बिरजू महाराज को दो प्रोग्राम तक करने पड़े।यह बिरजू महाराज के जीवन का सबसे दुखद समय था।

3.बिरजू महाराज के गुरु कौन थे? उनका संक्षिप्त परिचय दें?

Ans .महाराज के गुरु उनके पिता जी थे। वे अपने समय के कथक के महान नर्तक थे। उन्होंने ही बिरजू महाराज और उनके दोस्त जगत करार को 500 रुपये नजराना लेकर गण्डा बाँधा था।

4. बिरजू महाराज की अपने शागिर्दो के बारे में क्या राय है?

Ans .वे उन्हें शाश्वती कहते हैं। इसके साथ-साथ वैरोनिक, फिलिप, मेक्लीन टॉक, तीरथ प्रताप, दुर्गा इत्यादि को उन्होंने प्रमुख शागिर्द बताया है। ये लोग नृत्य के क्षेत्र में प्रगति कर रहे हैं और प्रगतिशील बने हुए हैं

5. लखनऊ और रामपुर से बिरजू महाराज का क्या संबंध है?

Ans. लखनऊ में विरजू महाराज का जन्म हुआ था। बिरजू महाराज की तीन बड़ी बहनों का जन्म रामपुर में हुआ था। उनके पिताजी रामपुर में बाइस साल रहे। उस समय विभिन्न राजा कुछ समय के लिए कलाकारों को मांग लिया करते थे। जब बिरजू महाराज पाँच-छः साल के थे तब उनके पिताजी पुनः रामपुर लौट आये रामपुर के नवाब साहब को बिरजू महाराज पसंद आ गये थे वहाँ आकर नाचते थे। इस तरह लखनऊ और रामपुर से महाराज का आत्मीय संबंध था।

6. नृत्य की शिक्षा के लिए पहले-पहल बिरजू महाराज किस संस्था से जुड़े और वहाँ किनके सम्पर्क में आए?

. नृत्य की शिक्षा के लिए पहले पहल विरजू महाराज हिन्दुस्तानी डांस म्यूजिक से जुड़े और वहाँ निर्मलाजी जोशी के सम्पर्क में आए। हिन्दुस्तानी डांस म्यूजिक दिल्ली में था।

7. अपने विवाह के बारे में बिरजू महाराज क्या बताते हैं?

Ans. बिरजू महाराज की शादी 18 वर्ष की उम्र में हुई थी। उस समय वे विवाह के खिलाफ थे। लेकिन पिता की मृत्यु और माँ की घबराहट के कारण उन्होंने जल्दी में शादी कर ली शादी को साधना में वे नुकसानदेह मानते थे। विवाह के कारण वे नौकरी करते रहे।

मछली

1.संतू मछली लेकर क्यों भागा?

Ans .मछलियों को लेकर बच्चों की अभिलाषा थी कि घर पहुँचकर किसी तरह मछली को जिंदा रखा जाय। इसमें एक मछली पिता जी से
माँगकर कुएँ में डालकर बहुत बड़ी करेंगे और जब मन होगा बाल्टी से निकालकर खेलेंगे।जब भग्गू मछली काटने लगा तब संतू उदास मन से उसके पीछे खभे के पास टिककर देखने लगा। एक मछली के कट जाने के बाद संतु को लगता है कि तीनों मछलियाँ काट दी जायेंगी। इसलिए देखते ही देखत मछली अंगोछे से उठाकर बाहर की तरफ सरपट भाग जाता है।

2. मछली को छूते हुए संतू क्यों हिचक रहा था?

Ans. संतू बड़े प्यार से मछलियों की तरफ देख रहा था। वह मछलियों को एक छूकर देखना चाहता था लेकिन हिचक रहा था क्योंकि उसे डर था कि मछली उसे काट न ले।

3. मछली और दीदी में क्या समानता दिखलाई पड़ी? स्पष्ट करें।

Ans .आदमी के चपेट में आने पर मछली कटने के लिए मजबूर थी। पानी नहीं रहने के कारण गमछे में लिपटी मछली लहरा रही थी। दीदी कमरे में करबट लिए पहनी हुई साड़ी को सिर से ओढ़े सिसक-सिसक कर रो रही थी । हिचकी लेते हुए दीदी का पूरा शरीर सिहर रहा था। यहाँ दीदी का सिहरना कंपकपाना और मछली का लहराना दोनों में समानता दिखलाई पड़ती है। मछली और दीदी बेजुवान और विवश है।

नौबतखाने में इबादत

1.डुमरॉव की महत्ता किस कारण से है?

Ans. डुमराँव की महत्ता शहनाई और शहनाई वादक उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ के कारण है। शहनाई और डुमरॉव एक-दूसरे के लिए उपयोगी थे। शहनाई बजाने के लिए रीड का प्रयोग होता है। रीड अंदर से पोली होती है जिसके सहारे शहनाई को फूंका जाता है। रीड, नरकट (एक प्रकार की घास) से बनाई जाती है जो डुमरॉव के आसपास की नदियों के कछारों में पाई जाती है।

2. 'बिस्मिल्ला खाँ का मतलब - बिस्मिल्ला खाँ की शहनाई।' एक का एक साधन मात्र है।

ANS. बिस्मिल्ला खाँ शहनाई के शीर्षस्थ कलाकार हैं। शहनाई और शहनाई वादन ही उनका जीवन है। वे शहनाई के एक सच्चे साधक थे, उनकी साधना अटूट थी।बिस्मिल्ला खाँ का अर्थ है-बिस्मिल्ला खाँ की शहनाई। शहनाई का तात्पर्य बिस्मिल्ला खाँ का हाथ। हाथ में आशय इतना भर कि बिस्मिल्ला खाँ की फूँक और शहनाई की जादुई आवाज का असर हमारे सिर चढ़कर बोलने लगता है। इनके शहनाई का कारुणिक संगीत मंगल ध्वनि बन गई और सुर की साध अमर। गाँधीजी का मानना है कि अगर हम व्यक्ति चरित्र निर्माण करने में सफल हो
जाएँगे तो समाज अपना काम आप संभाल लेगा। इस प्रकार जिन व्यक्तियों का विकास हो जाएगा, उनके हाथों में समाज के संगठन का काम सौंपा जा सकता है।

शिक्षा और संस्कृति

1. गाँधीजी के अनुसार शिक्षा का जरूरी अंग क्या होना चाहिए?

Ans. गाँधीजी के अनुसार अहिंसक प्रतिरोध सबसे उदात्त और बढ़िया शिक्षा है। उनके अनुसार शिक्षा का जरूरी अंग यह होना चाहिए कि बालक जीवन संग्राम में प्रेम से घृणा को, सत्य से असत्य को और कष्ट सहन से हिंसा को असानी के साथ जीतना सीखे।

2. गाँधीजी बढ़िया शिक्षा किसे कहते हैं?

Ans. अहिंसक प्रतिरोध को गाँधीजी सबसे उदात्त और बढ़िया शिक्षा कहते हैं। उनके अनुसार यह शिक्षा बच्चों को मिलनेवाली साधारण अक्षर ज्ञान की शिक्षा के बाद नहीं पहले होनी चाहिए।

3.शिक्षा का ध्येय गाँधीजी क्या मानते थे और क्यों?

Ans.शिक्षा का ध्येय गाँधीजी चरित्र-निर्माण को मानते हैं। यह साक्षरता से ज्यादा महत्त्वपूर्ण है, किताबी ज्ञान तो उस बड़े उद्देश्य का एक साधन मात्र है। गाँधीजी का मानना है कि अगर हम व्यक्ति चरित्र निर्माण करने में सफल हो जाएँगे तो समाज अपना काम आप संभाल लेगा। इस प्रकार जिन व्यक्तियों का विकास हो जाएगा, उनके हाथों में समाज के संगठन का काम सौंपा जा सकता है।

4. गाँधीजी किस तरह के सामंजस्य को भारत के लिए बेहतर मानते हैं, क्यों?

Ans .भारतीय संस्कृति भिन्न-भिन्न संस्कृतियों के सामंजस्य की प्रतीक है। जिनके हिन्दुस्तान में पैर जम गए हैं, जिनका भारतीय जीवन पर प्रभाव पड़ चुका है और जो स्वयं भी भारतीय जीवन से प्रभावित हुई है। यह सामंजस्य कुदरती तौर पर स्वदेशी ढंग का होगा, जिसमें प्रत्येक संस्कृति के लिए अपना

उचित स्थान सुरक्षित होगा। वह अमरीकी ढंग का सामंजस्य नहीं होगा, जिसमें एक प्रमुख संस्कृति बाकी संस्कृतियों को हजम कर लेती है और जिसका लक्ष्य मेल की तरफ नहीं है बल्कि कृत्रिम और जबरदस्ती की एकता की ओर है।

पदखंड

1.मुक्ति के लिए किसे आवश्यक माना गया है?

Ans .निर्गुण ब्राहम के उपासक गुरुनानक राम नाम की महता पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं कि राम नाम के बिना यह जीवन व्यर्थ है। वे कहते हैं गुरु यानी भगवान का भजन किए बिना व्यक्ति को इस सांसारिक माया जाल से मुक्ति नहीं मिल सकती। राम नाम के बिना माया रूपी मृगतृष्णा में भटकता हुआ व्यक्ति उलझकर रह जाता है। इसलिए मुक्ति के लिए राम नाम कीर्तन आवश्यक है।कवि गुरुनानक का कहना है कि सच्चे हृदय से राम-नाम कीर्तन की सच्ची स्थायी शांति देकर व्यक्ति को इस दुखमय जीवन के पार पहुँचा पाता है। जो व्यक्ति राम नाम की कीर्तन नहीं करता, जो सिर्फ सांसारिक मोह माया में लगा रहता है उसकी वाणी विष के समान हो जाती है।

3.हरिरस से कवि का क्या अभिप्राय है?

Ans .कवि राम नाम की महिमा का बखान करते हुए कहते हैं, भगवान के नाम से बढ़कर अन्य कोई धर्म साधना नहीं है। कवि के अनुसार भगवत् कीर्त्तन से प्राप्त परमानंद की अनुभूति ही 'हरिरस है। भगवान के नाम-कीर्तन से चित्त शुद्ध होता है, मानसिक विकार दूर होते हैं, मन में अनुराग होता है और इससे परम आनंद की अनुभूति होती है। यही 'हरिरस' है। इसी रसपान से जीव धन्य हो जाता है। उसका जीवन सफल हो जाता है।

4. नाम बिनु बिरथे जगि जनमा' पद का मुख्य भाव क्या है?

Ans.गुरुनानक रचित कविता राम नाम बिनु विरथे जागि जनमा का मूल भाव है— बाहरी वेश-भूषा, पूजा-पाठ और कर्मकाण्ड के स्थान पर सरल सच्चे हृदय से राम-नाम के कीर्तन नहीं की उसका जीवन व्यर्थ है क्योंकि नाम कीर्तन ही सच्ची स्थायी शांति देकर व्यक्ति को इस दुखमय जीवन के
शब्दों में लिखें।
पार पहुँचा पाता है।

5. कवि किसके बिना जगत् में जन्म व्यर्थ मानता है?

Ans. निर्गुण ब्रह्म उपासक गुरुनानक 'राम नाम बिनु विरथे जगि जनमा' शीर्षक कविता में राम नाम की महिमा का बखान करते हुए कहते हैं कि ईश्वर की महिमा अपरमपार है। नाम-कीर्तन से बढ़कर कोई धर्म साधना नहीं है। इसलिए राम नाम के बिना जगत् में मनुष्य जन्म व्यर्थ है। राम नाम लेने से ही ईश्वर एवं ईश्वरत्व की प्राप्ति होती है।

6 .जो नर दुख में दुख नहीं मानै' कविता का भावार्थ लिखें।

Ans.'जो नर दुख में 'दुख नहि मानै' शीर्षक पद में सुख-दुख में एक समान उदासीन रहते हुए मानसिक दुर्गुणों से ऊपर उठकर अंत:करण की निर्मलता हासिल करने पर जोर दिया गया हैं। संत कवि गुरु की कृपा प्राप्त कर इस पद में गोविन्द से एकाकार होने की प्रेरणा देता है।दुख में हमें दुखी नहीं होना है। हममें सुख, स्नेह और भय नहीं होना चाहिए। सोना को मिट्टी समझना चाहए। हर्ष और शोक से न्यारा रहना चाहिए। मान-अपमान दूर रहना चाहिए। मन से आशा का त्याग कर देना चाहिए। जग में निराशा में भी जीने की कला सीखनी चाहिए। काम और क्रोध का स्पर्श भी नहीं होना चाहिए। ऐसे ही देह में ब्रह्म-ईश्वर का निवास होता है। जिस पर गुरु की कृपा होती है वहीं इस उपाय को पहचान पाता है। गुरु नानक कहते हैं कि ऐसे ही लोग गोविन्द में लीन हो पाते हैं। जिस तरह पानी में पानी मिलकर एकाकार हो जाता है उसी तरह इंसान भी गोविन्द (ईश्वर) से मिलकर एकाकार हो जाता है।

प्रेम - अयनि श्री राधिका करील के कुंजन ऊपर वारों

1. कवि ने माली-मालिन किन्हें और क्यों कहा है?

Ans 'सम्प्रदायमुक्त कृष्ण भक्त कवि रसखान' ने माली-मालिन कृष्ण और राधा को कहा है क्योंकि कवि राधा कृष्ण के प्रेममय युगल रूप को प्रेम भरे नेत्रों से देखा है। यहाँ प्रेम को वाटिका मानते हुए उस प्रेम-वाटिका के माली - मालिन कृष्ण राधा को मानते हैं। वाटिका का विकास माली-मालिन की कृपा पर ही निर्भर है। अत: प्रेम. वाटिका में पुष्पित पल्लवित कृष्ण और राधा के युगल दर्शन ही कर सकते हैं।

2. कृष्ण को चोर क्यों कहा गया है? कवि का अभिप्राय स्पष्ट करें।

Ans .कवि रसखान कृष्ण और राधा के सुंदर और मोहक छवि का बखान करते हुए कहते हैं कि उनके मनमोहक छवि को देखकर मन पूर्णत: मनमुग्ध हो गया है। यह लगता है कि यह शरीर मन और चित्त रहित हो गया है। अब उन्हें कुछ भी दिखाई नहीं देता केवल कृष्णा ही उनके स्मृति पटल पर अंकित रहते हैं। इसलिए चित को हरने वाले कृष्ण को चोर कहा गया है।

3. रसखान रचित सवैये का भावार्थ अपने शब्दों में लिखें।

Ans .खान रचित सवैया-या लकुटी में कृष्ण और उनके ब्रज पर अपना जीवन सर्वस्व न्योछावर कर देने की भावमयी विदग्धता मुखरित है। लकुटी और कम्बल पर तीनों लोकों का राज़ कवि त्यागने के लिए तत्पर है। नन्द की गाय चराने में आठों सिद्धियों और नवों निधियों के सुख को कवि त्यागने को तैयार है। वह आँखें से ब्रज के बागों को निहारना चाहता है। कवि ने जब से ब्रज के वनों, निकुंजों, तालाबों तथा करील के सघन कुंजों को अपनी आँखों से देखा है, तब से इच्छा होती है कि ऐसे मनोहर निकुंजों की सुन्दरता के समक्ष करोड़ों सुनहरे अन्य सुखों को त्याग दे । कवि मूल्यवान महलों को छोड़कर जहाँ कृष्ण रासलीला करते थे, वहीं निवास करना चाहता है।

अति सूधो सनेह को मारग है मो अँसुवनिहिं लै बरसौ

1. परहित के लिए ही देह कौन धारण करता है? स्पष्ट कीजिए।

Ans .परहित के लिए देह बादल धारण करता है। बादल जल की वर्षा करके सभी प्राणियों में जीवन संचार करता है, जिससे सुख-चैन मिलता है। बादल की वर्षा उसके विरह के आँसू के प्रतीक स्वरूप है। उसके विरह के आँसू अमृत की वर्षा करते हैं। जिसकी एक-एक बूँद दूसरे को समर्पित कर देता है अपने लिए कुछ भी नहीं रखता। वह सब कुछ लुटा देता है, बदले में

2. कवि अपने आँसुओं को कहाँ पहुँचाना चाहता है और क्यों?

Ans .घनानंद अपनी प्रेयसी सुजान के निमित्त विरह वेदना को प्रकट करते हुए बादल से प्रेम के आँसुओं को पहुँचाने के लिए कहता है। वह अपने आँसुओं को सुजान के आँगन में पहुँचाना चाहता है। वह प्रेमी की याद में पीड़ा में है। प्रेमी प्रेयसी को व्यथा की आँसुओं से भिंगो देना चाहता है। वह प्रेम का संदेश प्रेयसी तक भेजना चाहता है।

3. 'मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं' से कवि का क्या अभिप्राय है?

Ans. कवि घनानंद कहते हैं कि प्रेम में देना ही पड़ता है। प्रेम में तो प्रेमी अपने इष्ट को सर्वस्व न्योछावर करके अपने को धन्य मानते हैं। यहाँ कवि एकपक्षीय प्रेम की व्यंजना का संपूर्ण समर्पण की भावना को उजागर किया है, तो दूसरी तरफ अपनी प्रेयसी की निर्मम बेरूखी की भी खबर लेता है। मनभर उड़ेलना प्रेमी कवि का स्वभाव है, तो छटाँक भर भी न स्वीटाना प्रेम पात्र सुवन की निर्मम बेरूखी है।

4. कवि प्रेममार्ग को 'अति सूधो' क्यों कहता है? इस मार्ग की क्या विशेषता है?

Ans .कवि कहते हैं, प्रेम का मार्ग अति सीधा और सुगम होता है। यह अमृत के सम्मान पवित्र और मधुर होता है। इस मार्ग में थोड़ा भी टेढ़ापन या धूर्तता नहीं चल सकती। जिसका हृदय निर्मल है तथा जिसने अपने आपको पूर्णत: समर्पित कर दिया है, वही इस मार्ग पर चल सकता है। प्रेम के मार्ग पर सरल एवं भोले हृदय वाले चल सकते हैं, ज्ञानी भटक जाते हैं।

स्वदेशी

1.नेताओं के बारे में कवि की क्या राय है?

Ans. कवि प्रेमघन इस देश के नेताओं के चरित्र पर व्यंग्यात्मक वर्णन करते. हुए कहते हैं जो व्यक्ति अपने तन के कपड़े यानी ढीली-ढाली धोती नहीं संभाल पाता वे देश को क्या संभाल सकेंगे? यहाँ के नेता गरीबों का शोषण करते हैं। वे फिरगियों के पिच्छलग्गू गये हैं ताकि उनका विलासी जीवन व्यतीत होता रहे। इन नेताओं में न तो देशप्रेम की भावना न ही देशवासियों के हित की चिंता । ये देश की स्थिति को सुधारने का कल्पना मात्र ही करते हैं।

2. . कवि को भारत में भारतीयता क्यों नहीं दिखाई पड़ती?

Ans .भारतीय संस्कृति, भारत में गुलामी के समय से ही गायब हो गयी थी। लोगों का खान-पान, वस्त्र पहनावा, बोल-चाल सब विदेशी हो गए थे। विद्या - बुद्धि, चाल-चलन, ठाट-बाट सभी भारतीयता से कोसों दूर थे। भाषण-भूषण, वस्त्र पहनावा, रीति-व्यवहार और नीति-व्यवहार सभी देशी व्यवहार के विपरीत थे। हिन्दुस्तानी नाम से ही उन्हें लज्जा आने लगी थी। भारतीयता के नाम से ही उन्हें घृणा होने लगी थी। गाँव-शहर सब विदेशी प्रभाव से आक्रांत होने लगे थे। विदेशी चीजों का व्यापार होने लगा था। देशी धोती ढीली-ढाली हो गयी थी। देशी छोड़ विदेशी शासन के लोग अंग बनने लगे थे। सभी ने नौकरवृत्ति अपना ली थी। सभी चरण हो गए थे। सभी अंग्रेजी की झूठी प्रशंसा कर रहे थे। अत: कवि को भारतीयता के लक्षण नहीं दिखाई पड़ते थे। सब विदेशी हो रहा था। अंग्रेजी की झूठी प्रशंसा कर रहे थे। अत: कवि को भारतीयता के लक्षण नहीं दिखाई पड़ते थे। सब विदेशी हो रहा था।

3.स्वदेशी कविता का मूल भाव लिखें ?

Ans .'स्वदेशी' कविता का मूल भाव है भारत और भारतीय तथा भारतीय भाषा के प्रति प्रेम जागृत करना। 'स्वदेशी' कविता की रचना उस समय हुई थी जब देश परतंत्र था। उन दिनों 'स्वदेशी' शब्द ही राष्ट्रीयता एवं नवजागरण का प्रतीक था। स्वभावत: 'स्वदेशी' के दोहो की रचना के पीछे देश में फैले कुविचारों, रीतियों, नीतियों आदि को दूर कर लोगों में आत्म-सम्मान भरना एवं राष्ट्रीयता की भावना जागृत करना था। इसलिए कवि 'प्रेमघन' ने राष्ट्रीय-स्वाधीनता की चेतना को अपना लक्ष्य माना तथा सामंतवाद एवं साम्राज्यवाद का विरोध किया।

4. कवि समाज के किस वर्ग की आलोचना करता है और क्यों?

Ans. 'स्वदेशी' कविता के कवि तथाकथित साम्राज्यवाद के चाटूकार, सामंतवर्ग और अंग्रेजों के चापलूस दलालों की आलोचना करता है। जिनमें राष्ट्रीयता और भारतीयता का नामोनिशान नहीं होता। कवि समाज के इस नकली शिक्षित वर्ग की निन्दा करता है।

5. कवि ने 'डफाली' किसे कहा है और क्यों?

Ans. 'स्वदेशी' शीर्षक कविता के रचयिता बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन' ने अंगरेज प्रशंसक एवं अंगरेजियत पसंद करने वाले लोगों को डफ बजाने वाला या 'डफाली' कहा है।ये लोग अंग्रेजों की खुशामद करते थे, उनकी झूठी प्रशंसा करते थे। ये लोग, दास-वृति और नौकर वृति अपना ली थी। इसमें चारों वर्ण के लोग सम्मिलित थे। जिन्हें अपनी धोती नहीं सम्भलती थी, वे देश को संभालन की बात करते हैं।उत्तरीय प्रश्न प्रस्तुत यण चौधरी 'प्रेमघन' द्वारा रचित

भारतमाता

1.भारतमाता अपने ही घर में प्रवासिनी क्यों बनी हुई है?

Ans. भारतमाता को अंग्रेजों ने गुलामी की जंजीर में जकड़ रखा था। परतंत्रता की बेड़ी में जकड़ी, काल के कुचक्र में फंसी विवश भारतमाता चुपचाप अपने पुत्रों पर किये गये अत्याचार को देख रही है। उनका चित झुका हुआ है, मन गिरा हुआ और अवसादग्रस्त है। गुलामी की बेड़ी में जकड़ी हुई भारतमाता अभाव से ग्रसित है और अपने ही घर में प्रवासिनी बनी हुई है।

2. भारतमाता का हास भी राहुग्रसित क्यों दिखाई पड़ता है?

Ans .जिस प्रकार पूर्ण चन्द्रमा की रजत ज्योत्सना को राहु ग्रस कर निस्तेज कर देता है, ठीक उसी प्रकार भारतमाता की हँसी बंद है। वह दु:ख, अभाव, गरीबी से ग्रसित है। उसकी आजादी को विदेशियों ने छीनकर गुलाम बना डाला है। ऐसी पराजय, संताप, दु:ख और दैन्य के कारण ही भारतमाता की मुस्कुराहट राहुग्रसित दिखायी पड़ती है।

3 . 'भारतमाता' कविता में कवि भारतवासियों का कैसा चित्र खींचता है?

Ans .भारतमाता' कविता में कवि ने दर्शाया है कि परतंत्र भारत की स्थिति दयनीय हो गई है। भारतमाता गुलामी की जंजीरों में जकड़ी हुई है। यहाँ की तीस करोड़ जनता शोषित पीड़ित, भूखे पेट, नग्न वदन है। भारत का सिर झुका हुआ है। जनता असभ्य, अशिक्षित, निर्धन एवं वृक्षों के नीचे निवास कर रही है।इस कविता में कवि गुलामी की त्रासदी और वेदना में पड़ी भारतमाता का चित्र

जनतंत्र का जन्म

1.कवि ने जनता को 'दूधमुँही' क्यों कहा है?

Ans .सिंहासन पर आरुढ़ रहने वाले राजनेताओं की दृष्टि में यहाँ की जनता फूल की तरह है, दूधमुही बच्ची की तरह अबोध है। जिस प्रकार रोती हुई दूध मुंही बच्ची को शांत करने के लिए उसके सामने कुछ है, उसी प्रकार रोती हुई जनता को खुश करने के लिए कुछ प्रलोभन दे दिये जाते हैं।यहाँ की जनता को अपनी अनंत शक्ति का एहसास नहीं है। सचमुच वहाँ बेदना सहती है। ये फुल की तरह है जिसे अपना एहसास नहीं है।

2.कवि की दृष्टि में आज के देवता कौन हैं और वे कहाँ मिलेंगे?

Ans .वि की दृष्टि में आज के देवता कठोर परिश्रम करने वाले मजदूर और अन्नदाता कृषक हैं। आज के देवता की आरती उतारने के लिए मंदिर राजप्रसाद और तहखानों में खोजने की जरूरत नहीं है। भारत के जनतंत्र के ये देवता कहीं सड़कों पर गिट्टी तोड़ता नजर आ जाएगा। वे देवता खेतों-खलिहानों में मिल जाएगा।

3.कवि जनता के स्वप्न का किस तरह चित्र खींचता है?

Ans .वि दिनकर ने 'जनतंत्र का जन्म' कविता में जनता के स्वप्न का यथार्थ चित्र खींचा है। सदियों से गुलामी के अंधकार युग में रहने वाली जनता आज स्वतंत्रता के प्रकाशयुग में जा रही है। आज अधकार युग का अंत हो चुका है। वर्षों से स्वप्न को संजोये रखने वाली जनता निर्भय होकर नये युग में प्रवेश कर रही है। विराट जनतंत्र का उदय हुआ है और जनता जनतंत्र के उदय कर जय घोष कर रही है।

4. दिनकर की दृष्टि में रथ का घर्घर नाद क्या है? स्पष्ट करें।

Ans. 'जनतंत्र का जन्म' पाठ में कवि ने रथ का घर्घर नाद का अर्थ समयचक्र का परिवर्तन बतलाया है। समय परिवर्तनशील है। उसके परिवर्तन अथवा बदलाव को समझना ही रथ के घर्घर का नाद सुनना है। आज जनतंत्र का जन्म हो रहा है। राजतंत्र समय के भूडोल में नष्ट हो रहा है। जनता की ताकत प्रकट हो रही है। यह समयचक्र का परिवर्तन है। इस समय कवि रामधारी सिंह दिनकर समय के रथ की घर्घर आवाज के रूप में सुन रहा है।

5. "देवता मिलेंगे खेतों में खलिहानों में" पंक्ति के माध्यम से कवि किस देवता की बात करते हैं और क्यों?

Ans. देवता मिलेंगे खेतों में खलिहानों में पंक्ति के माध्यम से राष्ट्रकवि दिनकर कहते हैं, इस नव युग के देवता देश को समृद्ध करने वाले गरीब मेहनतकश मजदूर और अन्नदाता कृषक हैं। ये न तो मंदिर, न तहखाना, न मस्जिद आदि में मिलेंगे बल्कि ये तो कहीं सड़कों पर गिट्टी तोड़ते हुए मिलेंगे या खेतों और खलिहानों में मेहनत करते हुए मिलेंगे।

हीरोशिमा

1. हिरोशिमा में मनुष्य की साखी के रूप में क्या है?

Ans. सच्चिदानंद हीरानंद वात्सयायन 'अज्ञेय' रचित कविता हिरोशिमा आधुनिक सभ्यता की दुदांन्त मानवीय विभीषिका का चित्रण करती है। यह कविता आने वाले युग के लिए चेतावनी है।हिरोशिमा में मनुष्य का रचा हुआ सूरज परमाणु बम मनुष्य को ही सोख गया। आज भी हिरोशिमा में साखी के रूप में अर्थात् प्रमाण के रूप में जहाँ-तहाँ जले हुए पत्थर दीवारे पड़ी हुई है। यहाँ तक कि पत्थरों पर टुटी-फूटी सड़कों पर, घर के दीवारों पर लाश के निशान छाया के रूप में साक्षी है। यही साक्षी अतीत के घटनाओं का वर्णन करती है।

2. 'हिरोशिमा' कविता से हमें क्या सीख मिलती है?

Ans. अज्ञेय रचित कविता 'हिरोशिमा' आधुनिक सभ्यता की दुर्दान्त विभीषिका का चित्रण करती है। इस धरती के मनुष्यों को इस घटना और इस कविता से संदेश ग्रहण करना चाहिए कि परमाणु शक्ति होने का अहंकार त्याग देना चाहिए। हमें मानवतावाद में विश्वास करते हुए अहिंसा का सहारा लेना चाहिए। अहिंसा ही हमारा परम धर्म होना चाहिए। अहिंसा परमोधर्मम्।

3. कवि जनता के स्वप्न का किस तरह चित्र खींचता है?

Ans. परमाणु बम के विस्फोट से जो अग्नि पैदा होती है। उसका प्रकाश अनंत होता है। धरती के मनुष्य जल जाते हैं। कोई नहीं बचता है। मनुष्य की कोई

छाया बनती नहीं है या बनती भी है तो यह दिशाहीन होती है। मनुष्य भाप बन जाता है।

4. दिनकर की दृष्टि में रथ का घर्घर नाद क्या है? स्पष्ट करें।

Ans. हिरोशिमा में परमाणु बम के विस्फोट से रोशनी पैदा हुई तो सभी मनुष्य, घास, पेड़-पौधे राख हो गए। मानव जन की छायाएँ दिशाहीन सब ओर पड़ी थी। सभी चिथड़े-चिथड़े होकर व्योम में फैल गए थे। आगे मानव जन बचे ही नहीं, सब भाप बनकर उड़ गए। छायाएँ अभी लिखी है —झुलसे हुए पत्थरों पर और उजड़ी सड़क के धरातल पर ।

5.देवता मिलेंगे खेतों में खलिहानों में" पंक्ति के माध्यम से कवि किस देवता की बात करते हैं और क्यों?

Ans .परमाणु बम के विस्फोट से अनंत ऊर्जा प्रकट होती है। एक क्षण में अनंत प्रकाश चमक उठता है। जैसे वह कुछ क्षण का उदय अस्त सूरज का हो। दोपहर में प्राकृतिक सूर्य की गर्मी से सभी त्रस्त हो उठते हैं। लेकिन परमाणु विस्फोटक की गर्मी से मनुष्य शेष बचता ही नहीं है। सभी मानव भाप बनकर उड़ जाते हैं। यह दोपहर अत्यंत खतरनाक सिद्ध हुई।

एक वृक्ष की हत्या

1. घर, शहर और देश के बाद कवि किन चीजों को बचाने की बात करता है और क्यों?

Ans. घर, शहर और देश के बाद कवि पर्यावरण विषयक अपनी चिंता प्रकट करता है। कवि कहता है— नदियों को नाला हो जाने से बचाना है। पेड़ कट जाने और नदियों में बालू, कूड़ा-करकट भर जाने से नदियाँ नाला का रूप लेती जा रही है। हवा में इतना प्रदूषण मिलता जा रहा है कि हवा धुएं के समान होती जा रही हैं। लोग शुद्ध हवा के लिए तरसने लगे हैं। इसलिए जंगल को मरुभूमि होने से बचाना है। अर्थात् कवि मनुष्य और मनुष्यता को बचाने की बात करता है।

2. कवि को वृक्ष बूढ़ा चौकीदार क्यों लगता था ?

Ans. 'एक वृक्ष की हत्या' कुँवर नारायण रचित कविता है। जिसमें तुरंट काटे गए एक वृक्ष की बहाने पर्यावरण, मनुष्य की सभ्यता के विनाश की अंतर्व्यथा को अभिव्यक्त करती है।कवि दरवाजे के आगे खड़ा वृक्ष का मानवीकरण करते हुए स्पष्ट करते हैं कि यह वृक्ष बूढ़ा चौकीदार की तरह घर की सुरक्षा में सदैव तत्पर रहता है। यह वृक्ष हर मौसम तथा हर परिस्थिति में खड़ा अपनी छाया प्रदान कर हमारी रक्षा करता है। वृक्ष की छाल खाकी वर्दी की तरह और पेड की सूखी डाल राइफल की तरह दिखते हैं। इसलिए कवि वृक्ष को बूढ़ा चौकीदार कहते हैं।

3. कविता का समापन करते हुए कवि अपने किन-किन आदेशों का जिक्र करता है और क्यों?

Ans. कवि कुँवर नारायण कविता 'एक वृक्ष की हत्या का समापन करते हुए सम्पूर्ण जीव-जगत के प्रति आस्था रखते हुए अपने अंदेशों को व्यक्त करता है। कवि कहता है कि घर को बचाना है लुटेरों से, शहर को बचाना है— नादिरशाह जैसे लुटेरों से देश को बचाना है — देश के दुश्मनों से नदियों को नाला हो जाने से, हवा को धुआँ हो जाने से और खाना को जहर हो जाने से बचाना है। मनुष्य को जंगल होने से बचाना है, तो जंगल को मरुस्थल होने से बचाना है। कवि का कहना है कि मनुष्य आज धुआँधार जंगल काट रहा है, जंगलकाटने से मनुष्य के साथ-साथ संपूर्ण जीव जगत का नाश हो जाएगा। अतः कवि अपने अंदेशों के बहाने अपनी संवेदनशीलता प्रकट करता है।

4. वृक्ष और कवि में क्या संवाद होता था?

Ans. कवि के घर के दरवाजे पर एक चौकीदार की भाँति बूढ़ा वृक्ष खड़ा था। जब कवि दरवाजे की ओर आता तो ललकारता —'कौन'? तब उत्तर मिलता —'दोस्त'। कवि उसके दोस्त के समान था। कवि पल भर उसको ठंढी छाँव में बैठ जाता था। कवि उसकी रक्षा करता था। कवि को उस पेड़ के दुश्मनों का भय था ।

हमारी नींद

1.हमारी नींद कविता किस प्रकार के जीवन का चित्रण करती है?

1. वीरेन डंगवाल ने हमारी नींद कविता के माध्यम से सुविधाभोगी आराम पसंद जीवन अथवा हमारी वेपरवाहियों के बाहर विपरीत परिस्थितियों से लगातार लड़ते हुए आगे बढ़ते जाने वाले जीवन का चित्रण करते हैं।

2.कवि वीरेन डंगवाल अत्याचारियों का क्यों जिक्र करता है?

Ans. कवि वीरेन डंगवाल उन अत्याचारियों का जिक्र किया है जो सुविधाभोगी, आराम पसंद जीवन जीने के लिए सुख-भोग के सारे साधनों का संग्रह करने के बावजूद अपनी संग्रह और शोषण प्रवृत्ति का त्याग करना नहीं चाहते। इन्हें सामाजिक विकास की कोई चिंता नहीं होती, ये हर कीमत पर अपना विकास चाहते हैं। वे भोली-भाली जनता की सज्जनता का नाजायज लाभ उठाते हैं।

3. 'हमारी नींद' कविता की सार्थकता पर विचार करें।

3. हमारी नींद शीर्षक कविता का शीर्षक विषय-वस्तु प्रधान है। शीर्षक छोटा है और आकर्षक भी है। यह कविता आज के जीवन में अत्यंत सार्थक है। यह सुविधाभोगी, आराम पसंद जीवन अथवा हमारी बेपरवाहियों के बाहर विपरीत परिस्थितियों से लगातार लड़ते हुए बढ़ते जाने वाले जीवन का चित्रण करती है।

4. मक्खी के जीवनक्रम का कवि द्वारा उल्लेख किए जाने का क्या आशय है ?

Ans. कवि वीरेन डंगवाल ने हमारी नींद शीर्षक कविता में लिखा है कि हमारी नींद के दौरान ही एक मक्खी का जीवनक्रम पूरा हो जाता है। यहाँ कवि ने

मक्खी को प्रतीकात्मक रूप दिया है। मक्खी का अर्थ निम्न स्तरीय जीवन की संकीर्णता है। मक्खी सुविधाभोगी, परजीवी होती है। एक मक्खी से सैकड़ों मक्खियों का उद्भव होता है, जिसका जीवन तुच्छ होता है। उसी प्रकार एक अत्याचारी कई अत्याचारियों को जन्म देता है, उसका जीवन-चक्र विनाश के लिए होता है।

5.कवि विरिनी डंगवाल के अनुसार धमाके से कहाँ 'देवी जागरण' हुआ?

Ans . कवि वीरेन डंगवाल के अनुसार धमाके से गरीब बस्तियों में देवी जागरण हुआ। कवि का कहना है कि लोग कर्म की जगह भक्ति में लीन नजर आते हैं। जिन्हें अपनी गरीबी दूर करने में संलग्न होनी चाहिए वे भक्ति भजन में लगे हैं।

6.मारी नींद शीर्षक कविता किस कविता संकलन से ली गई है?

Ans. 'हमारी नींद' शीर्षक कविता कविताओं के संकलन 'दुष्चक्र में स्रष्टा' से ली गई है। इसके कवि 'वीरेन डंगवाल' है।

अक्षर ज्ञान

1. कविता में 'क' का विवरण स्पष्ट कीजिए?

प्रस्तुत कविता 'अक्षर ज्ञान' में कवयित्री अनामिका द्वारा प्रारंभिक अक्षर-बोध को साकार रूप में चित्रित करते हुए कहती है कि "क" को लिखने में अभ्यास पुस्तिका का चौखट छोटा पड़ जाता है। चौखटे में 'क' अँटता नहीं है। संघर्ष पथ भी इसी प्रकार प्रारंभ में फिसलन भरा होता है। 'क' से कबूतर सिखलाया जाता है, वह फुदक जाता है। इस प्रकार 'क' प्रथमाक्षर में व्यापक जीवन का प्रारंभ छिपा होता है।

2. बेटे के आँसू कब आते हैं और क्यों?

Ans. कवयित्री, अनामिका ने क, ख, ग, घ सीखने के क्रम में संघर्ष करते बेटे की कहानी कही है। 'क' से 'घ' तक तो बच्चा आसानी से सीख जाता है लेकिन 'ङ' सीखने में वह फँस जाता है। सीखने के क्रम में बच्चा लगातार प्रयास करता रहता है और इस प्रयास में विफल होने पर निराशा के स्थिति में उसके आँसू निकल आते हैं।

लौटकर आऊँगा फिर

1.कवि जीवनानंद दास अगले जीवन में क्या-क्या बनने की संभावना व्यक्त करते हैं और क्यों?

Ans. कवि जीवनानंद दास को अपनी मातृभूमि बंगाल से असीम प्रेम है। कवि की इच्छा मातृभूमि पर पुनर्जन्म की है। इसलिए वह अगले जन्म में किसी न किसी रूप में लौटकर बंगाल आने की इच्छा व्यक्त करते हैं। कवि कहता है कि वह अबाबली-मांडकी चिड़िया, कौवा, हंस, उल्लू, सारस बनकर बंगाल आएगा। वहाँ की प्रकृति उसे बुलाएंगी और वह नए वेश में अगले जन्म में बंगाल आएगा।

2.कवि किस तरह के बंगाल में एक दिन लौटकर आने की बात करता है?

Ans. कवि जीवनानंद दास को अपनी मातृभूमि से असीम प्रेम है। उनकी उत्कट, इच्छा मातृभूमि पर पुनर्जन्म की है। वे कवि बंगाल के उस अनुपम, सुशोभित एवं रमरणीय धरती पर एक दिन लौटकर आने की बात करते हैं जहाँ धान के खेत हो, जहाँ बहती नदी का किनारा हो ओर जहाँ भोर की सुनहली किरणे हों।

2.कवि जीवनानंद दास अलगे जन्म में अपने मनुष्य होने में क्यों संदेह करता है? इसका क्या कारण हो सकता है?

Ans. कवि जीवनानंद दास को अपनी मातृभूमि से असीम प्रेम है। उनकी उत्कट, इच्छा मातृभूमि पर पुनर्जन्म की है। वे कवि बंगाल के उस अनुपम, सुशोभित एवं रमरणीय धरती पर एक दिन लौटकर आने की बात करते हैं जहाँ धान के खेत हो, जहाँ बहती नदी का किनारा हो ओर जहाँ भोर की सुनहली किरणे हों।

3. कवि जीवनानंद दास अलगे जन्म में अपने मनुष्य होने में क्यों संदेह करता है? इसका क्या कारण हो सकता है?

Ans. 'लौटकर आऊँगा फिर' शीर्षक कविता में कवि जीवनानंद दास ने बंगाल से अपना लगाव स्पष्ट किया है। मातृभूमि से कवि को अत्यंत प्रेम है। कवि को अपनी मातृभूमि से इतना प्रेम है कि अगले जन्म में वह बार-बार किसी-न-किसी रूप में बंगाल में ही जन्म लेना और रहना चाहता है। वह चिड़िया, कौवा, हँस, उल्लू और सारस बनकर यहाँ आना चाहता है। कवि इस बात में विश्वास करता है कि यह कोई जरूरी नहीं कि मनुष्य में ही जन्म लेगा अतः वह अन्य रूप में भी बंगाल आएगा।

मेरे बिना तुम प्रभु

1.कवि अपने को जलपात्र और मदिरा क्यों कहता है?

Ans. कवि रेनर मारिया रिल्के एक भक्त कवि हैं। उनका मानना है भक्त एवं भगवान अभिन्न है, भक्त है, तभी भगवान हैं। भक्त की महत्ता का स्पष्ट करते हुए कवि भक्त को जलपात्र और मदिरा कहा है क्योंकि जलपात्र के माध्यम से जल को अर्पित किया जाता है। मदिरा कहने का उद्देश्य यह है कि भगवान भक्त की प्रेमपूर्ण भक्ति से उसी प्रकार मस्त हो जाते हैं। जैसे मदिरा का पान कर कोई सुध-बुध खो बैठता है। अतः कवि अपने को जलपात्र और मदिरा दोनों माना है।

2. शानदार लबादा किसका गिर जाएगा और क्यों?

Ans 'मेरे बिना तुम प्रभु' शीर्षक कविता में जर्मन कवि रेनर मारिया रिल्के कहते हैं भक्त के बिना भगवान निरर्थक, बेसहारा और निरुपाय है। उनकी भगवता भक्त पर ही निर्भर करती है। भक्त और भगवान का संबंध अन्योन्याश्रित तथा एक दूसरे के पूरक है। भगवान पूर्ण होकर भी बिना भक्त के

अधूरे हैं। बिना भक्त के भगवान का शानदार वस्त्र अपनी चमक खो बैठेगा। उनका शानदार लवादा गिर जाएगा। भगवान का अस्तित्व भक्तों से ही है।

3. 'मेरे बिना तुम प्रभु' कविता के आधार पर भक्त और भगवान के बीच के

Ans. 'मेरे बिना तुम प्रभु' कविता में भक्त और भगवान के बीच की घनिष्ठता का वर्णन है। भक्त के अस्तित्व के बिना भगवान निराधार हैं। भक्त जलपात्र है और भगवान मदिरा का आनंद। भक्त के बिना प्रभु गृहविहीन निर्वासित होंगे। भक्त आधार है और ईश्वर आराध्य देव हैं।

4.कवि रेनर मारिया रिल्के किसको कैसा सुख देते थे?

Ans. कवि रेनर मारिया रिल्के भक्त कवि हैं। उनका मानना है कि बिना भक्त के भगवान भी एकाकी और निरूपाय है। कवि भगवान की कृपा दृष्टि की शय्या है। कवि के नरम कपोलों पर जब भगवान की कृपादृष्टि विश्राम लेती है, तब भगवान को सुख मिलता है। अर्थात् भक्त भगवान का कृपापात्र होता है और भक्तरूपी पात्र से भगवान भी सुखी होते हैं।

दही वाली मंगम्मा

1.बहू ने सास को मनाने के लिए कौन-सा तरीका अपनाया?

Ans. मंगम्मा की बहु बुद्धिमती और समझदार थी। बहू जानती थी कि उसकी सास अपने पोते से बहुत प्यार करती है। इसलिए वह ने सोच-विचार कर बच्चे को दादी के पास भेज दिया। बोली अपनी दादी के पास चली जा वह मिठाई देती है, हमारे घर कदम मत रखना। वह कई दिनों तक दादी के साथ रहा। एक दिन वह दादी के साथ दही बेचने जाएगा। मंगम्मा का हठीला क्रोध पिघल जाता है, बेटा-बहू ने उसे समझाया बुझाया और अपने गलती भी स्वीकार की, पोता ही समझौते का सूत्र बना।

2. मंगम्मा का अपनी बहू के साथ किस बात को लेकर विवाद था

Ans. मंगम्मा का अपनी बहू के साथ विवाद उसके पोते के मुद्दे पर हुआ। मंगम्मा अपने पोते को बहुत प्यार करती थी। एक दिन उसकी बहू ने अपने बेटे को खूब पीटा। इस पर मंगम्मा बिगड़ गयी। वह बहू को फटकारने लगी। बहू भी गुस्से में आ गयी। दोनों में वाक् युद्ध शुरू हो गया। उसकी बहू ने साफ शब्दों में कहा कि वह मेरा बेटा उसे मारने का मेरा हक है। उस घर में सास और बहू में स्वतंत्रता की होड़ लगी है। जिसमें बेटे ने भी पत्नी का ही साथ दिया। मंगम्मा का अपनी बहू के साथ विवाद का मुख्य कारण यही है।.

3.रंगप्पा कौन था और वह मंगम्मा से क्या चाहता था?

Ans. रंगप्पा गाँव का लम्पट, जुआरी और बदमाश था। वह मंगम्मा के घर की सारी बात, बहू से खटपट इत्यादि जानता था। वह मंगम्मा को अकेली जान उससे बार-बार धन उधार मांगता था। वह मंगम्मा का हाथ भी पकड़ लेता था।

4.'दही वाली मंगम्मा' कहानी का कथावाचक कौन है? उसका परिचय दीजिए।

4. 'दही वाली मंगम्मा' कहानी का कथावाचक श्रीनिवास जी हैं, जिनका पूरा नाम मास्ती वेंकटेश अय्यंगार है। इनका जन्म कर्नाटक प्रांत के कोलार नामक स्थान में 6 जून, 1891 ई० में हुआ था। श्रीनिवास कन्नड़ साहित्य के प्रतिष्ठित रचनाकारों में अन्यतम माने जाते हैं। इन्होंने साहित्य की विभिन्न विधाओं कविता, नाटक, आलोचना, जीवन चरित्र आदि में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

5. मंगम्मा का चरित्र-चित्रण कीजिए।

प्रस्तुत' कहानी 'दही वाली मंगम्मा' कन्नड़ कहानियाँ (नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया) से साभार लिया गया है। श्रीनिवासजी को इनकी साहित्यिक सेवा के लिए साहित्य अकादमी ने इन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार से पुरस्कृत किया। 5. मंगम्मा गाँव की सीधी-सादी नारियों का प्रतिनिधित्व करती है। वह परिश्रमी

6. रंगप्पा कौन था?

है और दही बेचती है। वह अपमान और कष्ट सहकर भी प्रतिष्ठा से रहना चाहती है। पति नहीं रहने पर किसी ऐरे गैरे के चक्कर में नहीं पड़ती, अपना धर्म नहीं छोड़ती। हाँ, बहू से कुछ खटपट जरूर हुई पर पोते के वात्सल्य प्रेम में सब ठीक हो जाता है। सारे परिवार एक साथ हो जाते हैं। इस प्रकार मंगम्मा एक भारतीय नारी है, जो सम्मान से जीना चाहती है। 6. रंगप्पा, मंगम्मा के गाँव का एक बदमाश व्यक्ति है। वह बड़ा शौकीन तबीयत का है। वह कभी-कभी जुआ भी खेलता है। रंगम्मा हमेशा मंगम्मा के पीछे पड़ा रहता है और वह उससे कर्ज की माँग करता है।

नगर

1. बड़े डॉक्टर पाप्पाति के बारे में पूछताछ क्यों कर रहे थे?

Ans. बड़े डॉक्टर पाप्पाति को 'एक्यूट केस ऑफ मेनिनजाइटिस' घोषित कर तुरंत एडमिट कर लेने का आदेश दिया था। बल्लि अम्माल दिन भर पुर्जा लेकर भटकती रहती है फिर भी वह पाप्पाति को एडमिट नहीं करा सकी। बड़े डॉक्टर विदेश से शिक्षा प्राप्त कर लौटे थे। उन्होंने हाल ही में ब्रिटिश मेडिकल जर्नल में उस रोग की कुछ नई दवाइयों के बारे में पढ़ा था। बड़े डॉक्टर जब वार्ड में पाप्पाति को नहीं देखते हैं, तब उसके बारे में पूछताछ करने लगते हैं।

2.लेखक ने कहानी का शीर्षक 'नगर' क्यों रखा है?

Ans. कोई रचनाकार या लेखक अपनी रचना का नामकरण देश, काल, पात्र, परिस्थिति, विषयवस्तु तथा प्रवृत्ति के आधार पर करते हैं। कहानीकार 'सुजाता' ने अपनी तमिल कहानी 'नगर' का शीर्षक 'नगर' नगरीय व्यवस्था के आधार पर रखा है। नगर हर सुविधाओं से युक्त होता है। जिस कारण ग्रामीणों को अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए यहाँ आना पड़ता है। कहानीकार इस कहानी के माध्यम से सारे नगरों की अव्यवस्था या अस्त-

व्यस्तता की ओर ध्यान आकृष्ट किया है। कहानी का शीर्षक घटना एवं परिस्थिति के अनुकूल है।

3. पाप्पाति कौन थी और वह शहरु क्यों लायी गयी थी?

Ans. पाप्पाति मदुरै के गाँव की गरीब अनपढ़ किसान वल्लि अम्माल की बेटी थी। पाप्पाति लगभग बारह साल की थी। पाप्पाति को तेज बुखार था। बल्लि अम्माल उसे गाँव के प्राइमरी हेल्थ सेंटर ले जाती है। वहाँ के डॉक्टर उसे मदुरै के बड़े अस्पताल में दिखाने का सलाह देते हैं। इसलिए पाप्पाति को उसकी माँ समुचित इलाज हेतु शहर लेकर आती है।

4.वल्लि अम्माल का चरित्र चित्रण करें।

4. वल्लि अम्माल 'नगर' कहानी की प्रमुख पात्र है। वह एक अशिक्षित महिला है। देहाती वातावरण में रहने के कारण शहरी वातावरण से परिचित नहीं है। वह संकोची स्वभाव की है। उसे गाँव के ओझा, झाड़-फूँक, मन्नतो पर अधिक विश्वास था।

5.'नगर'शीर्षक कहानी के शीर्षक की सार्थकता पर प्रकाश डालें। वल्लि अम्माल ने पाप्पाति के लिए क्या मन्नत मानी?

Ans. 'नगर' शीर्षक कहानी की कहानीकार सुजाता है। इस कहानी में गाँव की अनपढ़ गरीब किसान महिला वल्लि अम्माल और उसकी बीमार तरुणी बेटी पाप्पाति की कथा है। वल्लि अम्माल पहली बार अपनी बेटी की इलाज कराने मदुरै शहर के बड़े अस्पताल जाती है। उसे मदुरै नगर की सभ्यता और अस्पताल की प्रणालियाँ इतनी जटिल और उलझी और अमानवीय लगती है कि वह वहाँ लगभग खो जाती है। उसे अस्पताल का वातावरण इतना भयभीत कर देता है कि वह अपनी बेटी का इलाज कराये बिना ही लौट जाती है। अत: अव्यवहारिक जीवन शैली का प्रतीक 'नगर' शीर्षक सार्थक है।

6.विल्लिम ने पाप्ति के लिए क्या मन्नत मानी

Ans. वल्लि अम्माल ने पाप्पाति के लिए मन्नत मानी कि "पाप्पाति ठीक हो जाएगी तो वैदरीश्वरन जी के मंदिर जाकर दोनों हाथों में रेजगारी भरकर भगवान को भेंट चढ़ाऊगी।"

धरती कब तक घूमेगी

1. सीता की स्थिति बच्चों के किस खेल से मिलती जुलती है?

Ans. सीता की स्थिति बच्चों के 'माई-माई रोटी दे' वाली खेल से मिलती-जुलती है। बच्चों में से एक जना भिखारिन बनकर बारी-बारी से दूसरों के पास जाकर एक ही बात कहता है- 'माई-माई रोटी दे ..... उसे उत्तर

मिलता यह घर छोड़, दूसरे घर जा सीता सोचती हैं-बिल्कुल यही स्थिति है मेरी। मैं भी इस भिखारिनु जैसी हूँ। महीना होते ही बेटा कह देता है, 'माई यह घर छोड़, दूसरे घर जा।' और मैं रवाना हो जाती हूँ. आगे वाले घर के लिए। वहाँ भी महीना पूरा होते ही वही आदेश सुनायी देता है। "यह घर छोड़, दूसरे घर जा।'

2. सीता अपने ही घर में क्यों घुटन महसूस करती है?

Ans . सॉवर दइया की कहानी धरती कब तक घुमेगी की प्रमुख पात्र है। सीता अपने ही घर में बेटों और उनसे अधिक बहुओं का विष सहते सहते परेशान हो जाती है। एक माँ को तीन बेटे भी दो वक्त का रोटी नहीं दे पाते हैं। उसे दो रोटी के लिए अपमानित होना पड़ता है। उसे लगता है कि धरती आकाश सिमटकर बहुत छोटा हो गया है। इसलिए सीता अपने ही घर में

3. 'धरती कब तक घुमेगी' कहानी के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट करें?

साँवर दइया के कहानी का शीर्षक धरती कब तक घुमेगी घटना प्रधान है। सीता अपने ही घर में अपने बेटों और उससे अधिक बहुओं का विष सहते-सहते परेशान हो जाती है। वह तीन बेटों और बहुओं के मध्य घुटती और पीसती रहती है। उसे लगता है वह कब तक तीन बेटों और बहुओं के बीच घुमती रहूँगी। अन्ततः सीता घर छोड़कर चली जाती है। कहानी का शीर्षक अत्यंत सार्थक और व्यंग्यपूर्ण है।

4. सीता को किस दिन लगा कि 'लापसी' बिलकुल फीकी है? 'लापसी' खाते समय उसे कैसा महसूस हो रहा था?

Ans. सीता के बेटों ने तय किया कि होली के बाद माँ बारी-बारी से सभी के साथ रहेगी। 'नाहरसिंहजी वाले दिन खाना खाते वक्त सीता को लगा कि 'लापसी' बिलकुल फीकी है। 'लापसी' खाते हुए उसे महसूस हो रहा था कि कौर गले में अटक रहा है।